ऋग्वेद

वर्ष-१२ अंक-७
२७ मार्च २०१६

ओ३म्

यजुर्वेद

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2015-17
एक प्रति- २०-०० रु.

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

सामवेद

अथर्ववेद

※ एक दृष्टि में आर्य समाज ※

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्
वैदिक-रवि
मासिक

वर्ष-१२ अंक-७

२७ मार्च २०१६
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११६
विक्रम संवत् २०७२
दयानन्दाब्द १९१

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

क्र. विषय	पृष्ठ
संपादकीय	4
संसार (सृष्टि)	6
सुगन्धित वैदिक मुस्कान	8
सत्यधर्म–विचार	9
बजट	11
बोधकथा : सकारात्मक सोच की विजय	13
गुरु दक्षिणा	15
कृतज्ञता के भाव	16
सफलता	17
अभूतपूर्व वेद कथा का आयोजन सम्पन्न	18
मनुस्मृति को जलाना एक अज्ञानता	23
स्वामी अग्निवेशजी द्वारा फिर आपत्तिजनक बयान	24
सिंहस्थ	26

अप्रैल माह के पर्व त्यौहार एवं जयंती

8	चैत्र प्रतिपदा, नववर्ष
2073	प्रारंभ, डॉ. हेडगेवार जयंती गुड़ीपड़वा, नवरात्र प्रारंभ
10	डॉ. हेनीमेन जयंती
11	गुरु हरगोविन्द पुण्यतिथि, गुरु अंगदेव प्रण्य तिथि
13	जलियवाला बाग दिवस
14	सम्राट अशोक मौर्य जयंती
15	राम नवमीं
18	तात्याटोपे बलिदान दिवस
19	महावीर जयंती
20	गुरु हरकिशन पुण्यतिथि
22	हनुमान जन्मोत्सव
27	गुरु तेगबहादुर जयंती
29	गुरु अर्जुनदेव जयंती

सम्पादकीय :

महर्षि बोधोत्सव पर

आज समस्त आर्यजन महर्षि के जीवन की एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम को मनाने के लिए एकत्रित हुए हैं, निश्चित ही आज का यह दिवस यदि महर्षि के जीवन में न आया होता तो पता नहीं करोड़ों–करोड़ों व्यक्तियों को सत्य मार्ग दिखाई देता या नहीं। करोड़ों–करोड़ों व्यक्ति पाखण्ड के दलदल से बाहर निकल पाते या नहीं। वर्षों से गुलामी की दास्तां में जकड़ी भारतमाता कभी मुक्त हो पाती या नहीं ! और जो सबसे अहम महत्वपूर्ण उपलब्धि हमें प्राप्त हुई है, वह सनातन संस्कृति की धरोहर वेद ज्ञान है, वह भी हमें प्राप्त होती या न होती। ऐसे अनेक बिन्दु हैं, जिनमें महर्षि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है और उसका प्रारंभ शिवरात्रि से हुआ। शिव का अर्थ कल्याणकारी होता है, निश्चित वह शिवरात्रि हम सबके व करोड़ों–करोड़ों व्यक्तियों के जीवन के लिए कल्याणकारी सिद्ध हो गई।

महापुरूषों को याद करते हुए उनके माध्यम से कुछ विशेष दिन मनाये जाते हैं, लेकिन वह क्यों मनाये जाते हैं, समाज आज उसके महत्व को भूल चुका है और औपचारिताओं तक सीमित रह गया है। अंग्रेजी कवि लॉग फेलो ने एक महत्वपूर्ण बात महापुरूषों को याद करने के संबंध में बतायी है, जो बहुत ही उचित और प्रत्येक को अनुकरणीय है। वे लिखते हैं " Life of the great man are remind us We can make our life sublimea" अर्थात महापुरूषों को याद इसलिए किया जाना चाहिए कि हम उनके बताये मार्गों पर चलकर हमारे जीवन को चमकीला बनाए और इस दुनिया से बिदा लेते समय अपने कर्मो की छाप कर्म रेती पर छोड़ जाएं।

अब प्रश्न उठता है क्या हम ऋषि के बोधोत्सव, जन्मोत्सव अथवा निर्वाण दिवस को किस रूप में मनाते हैं। महर्षि ने जो कार्य किया था, जो उनके जीवन की अच्छाई हम आर्यों के लिए आदर्श बनी हैं, क्या उन पर हम चलते हुए महर्षि के कार्य को गति दे रहे हैं ? या अन्य व्यक्तियों की तरह औपचारिता ही निभा कर महर्षि की जय जयकार कर रहे हैं ?

यदि मेरे विचारों के कहे प्रथम स्वरूप को ईमानदारी से हम आत्मसात करते और महर्षि के बताये हुए उस मार्ग पर चलते और जो उद्देश्य था कि सम्पूर्ण विश्व में वैदिक विचारधारा का प्रचार प्रसार हो, सभी समाज को श्रेष्ठ बनाये, वह नहीं हो पाया। बहुत बड़ी जवाबदारी महर्षि ने हमारे कंधों पर सौंपी थी, लेकिन आज हम कहां खड़े हैं कितना महर्षि के विश्वास पर खरे उतरे हैं यह आत्मचिन्तन का विषय है।

आज की रात्रि महर्षि को तो सत्यज्ञान का सन्देश दे गयी और महर्षि ने उस क्षणिक घटना से संसार की विचारधारा को ही प्रभावित कर दिया। इतने कम समय में प्रचलित धारा के विपरीत जो अदम्य साहस महर्षि ने दिखाया वह

इतिहास की घटना का एक नया अध्याय है। किन्तु आज हम उस ज्ञान के सरोवर के पास बैठकर भी अतिरिक्त और अज्ञान पिपासा लेकर भटक रहे हैं। समाज का हर तबका हमारी ओर आशा भरी निगाहों से देखता था, महर्षि के मानवमात्र के लिए दिये गये अनमोल सन्देश का प्रभाव जनमानस के हृदय पटल पर गहरा पड़ा था, किन्तु हमारी अकर्मण्यता और उपेक्षा भाव से आज इसके बिलकुल विपरीत स्थिति हो गयी है। जो दूसरों को सहारा देते थे दूसरो को मार्गदर्शन देते थे वे स्वयं आज भ्रमित होकर चौराहे पर खडे हैं, यही आज प्रत्येक आर्य के मन की वेदना है।

आज सनातनधर्मी अनेक प्रकार के अन्धविश्वासों और भाग्य के भरोसे ईश्वर, धर्म और कर्म के नाम पर भटक रहे हैं। सनातन धर्म के स्वरूप का लोप होते जा रहा है। सनातनधर्म के स्थान पर नई–नई विचारधाराएं समाज में तेजी से प्रचलित हो रही हैं। सनातनधर्मी इन विचारधाराओं के सम्पर्क में होने से आपस में बंटते जा रहे हैं। सनातनधर्म पर विधर्मियों का आक्रमण शाम दाम दण्ड भेद हर नीति से हो रहा है। आम हिन्दू समाज सो रहा है। हिन्दू समाज का शोषण करके धर्म के नाम पर दुकानदारी चलाने वाले अनेक सन्त महात्मा उपदेशक कथावाचक हिन्दू समाज की इस व्यवस्था से बेखबर हैं और स्वार्थ में लिप्त हैं। ऐसे अवसर पर आर्य समाज की आज इस भ्रमित समाज को संभालने के लिए बहुत आवश्यकता है।

महर्षि का जीवन त्याग तपस्या परोपकार और सनातन संस्कृति की रक्षा के लिए था। समाज में फैले अन्धविश्वास को दूर करने का उनका भागीरथी प्रयत्न रहा। अपने मार्ग पर वे इतनी दृढ़ता से बढ़ते गए कि उन्हें मौत का भय भी अपने पद से हटा नहीं सका। अपने प्राणों की आहुति देकर भी ऋषि इस सनातन संस्कृति के लिए ही अमर हो गये। किन्तु हम उनके अनुयायी उनके इस बलिदान को ठीक से समझ नहीं पाए, उसका मूल्यांकन नहीं कर पाए। इसी कारण महर्षि के बताये मार्ग को इतना महत्व नहीं दे रहे हैं अन्यथा आज विश्व में वैदिक धर्म की दुन्दुभी बज गई होती।

कोई बात नहीं, जो बीत गया वो हमारे हाथ में नहीं है वो वापिस नहीं आ सकता, किन्तु जो बचा है उसे संभाला जा सकता है। अभी भी समय है बहुत कुछ अभी भी बचा है ईमानदारी से एक ऋषि भक्त बनकर अपने को पहचाने, अपने गुरूवर के बलिदान का सम्मान करें, उनके प्रति यदि मन में सद्भावना है तो उनके बताये मार्ग पर चलते हुए उस कार्य को हम पूरा करें जिसके लिए उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन दिया था। महर्षि को आज के दिन सत्य ज्ञान की प्राप्ति हुई थी एक नए मार्ग पर चलने का मार्ग प्रशस्त हुआ था। ईश्वर करें आज हमें भी उस ऋषि के मार्ग पर चलने का दृढ़ निश्चय प्राप्त हो जाए, हम भी उस कल्याणकारी मार्ग पर चलें, यही संकल्प व भावना इस बोधेत्सव को मनाने की सार्थकता है।

जल ही जीवन है, इसे व्यर्थ न बहाएं।

संसार (सृष्टि)

प्रश्न 105 : एक सृष्टि (संसार) की आयु कितनी होती है ?

उत्तर : एक सृष्टि (संसार) की आयु चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष होती है।

प्रश्न 106 : सृष्टि (संसार) की आयु किनसे मापी जाती है व उनकी आयु कितनी होती है।

उत्तर : सृष्टि (संसार) की आयु सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग से मापी जाती है। इसकी आयु निम्नलिखित है –

युग	वर्ष
सत युग	– 17,28,000 वर्ष
त्रेता युग	– 12,96,000 वर्ष
द्वापर युग	– 8,64,000 वर्ष
कलि युग	– 4,32,000 वर्ष

एक चतुर्युगी – 43,20,000 (तिरालिस लाख बीस हजार वर्ष)

प्रश्न 107 : एक सृष्टि में कुल कितनी चतुर्युगी होती है ?

उत्तर : एक सृष्टि में कुल एक हजार चतुर्युगी होती हैं।

प्रश्न 108 : एक सृष्टि में कितने मन्वन्तर होते हैं ?

उत्तर : एक सृष्टि में चौदह मन्वन्तर होते हैं।

प्रश्न 109 : वर्तमान में कौन सा मन्वन्तर चल रहा है व इसका नाम क्या है ?

उत्तर : वर्तमान में सातवॉ मन्वन्तर चल रहा है, इसका नाम वैवस्वत मन्वन्तर है।

प्रश्न 110 : एक मन्वन्तर में कितनी चतुर्युगी होती है व वर्तमान में कौन सी चतुर्युगी चल रही है ?

उत्तर : एक मन्वन्तर में इकहत्तर चतुर्युगी होती है तथा वर्तमान में अट्ठाइसवीं चतुर्युगी चल रही है।

प्रश्न 111 : वर्तमान कलियुग के कितने वर्ष बीत चुके हैं ?

उत्तर : विक्रम संवत् 2064 (ई. सं. 2008) में वर्तमान कलियुग के 5107 वर्ष बीत चुके हैं।

प्रश्न 112 : आगामी सतयुग का आरंभ कितने वर्षों के बाद होगा ?

उत्तर : आगामी सतयुग का आरंभ 4,26,892 वर्षों के बाद होगा।

प्रश्न 113 : सृष्टि का नववर्ष किस दिन बदलता है ?

उत्तर : सृष्टि का नववर्ष चैत्र सुदी प्रतिपदा (प्रथम) के दिन बदलता है।

प्रश्न 114 : वर्तमान सृष्टि की आयु कितनी हो चुकी है ?

उत्तर : वर्तमान सृष्टि की आयु 1 अरब 96 करोड़ 8 लाख 53 हजार 107 वर्ष हो चुकी है। (विकम संवत् 2064, ई. सं. 2008 में)

प्रश्न 115 : क्या काल के कारण धर्म–अधर्म होते हैं जैसे कि सुनने में आता है कलियुग में पापकर्म बढ़ जाते हैं।

उत्तर : नहीं, काल के कारण धर्म–अधर्म होते हैं। प्रत्येक काल में धर्म और अधर्म दोनों की प्रवृत्तियॉ चलती है।

प्रश्न 116 : सृष्टि (संसार) के प्रारंभ में मनुष्यों को किसने उत्पन्न किया और कैसे उत्पन्न किया ?

उत्तर : सृष्टि (संसार) के प्रारंभ में ईश्वर ने पृथ्वी के कणों से रज–वीर्य आदि धातु बनाई उसे मिलकर पंचभौतिक अर्थात पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन द्रव्यों से शरीर बनकर, धरती के अन्दर से हजारों की संख्या में नवयुवक और नवयुवतियों को एक साथ उत्पन्न किया, जो शरीर से तो बलिष्ठ थे, किन्तु उनको बहुत ही कम ज्ञान था।

प्रश्न 117 : फिर उन मनुष्यों को ज्ञान कैसे हुआ ?

उत्तर : ईश्वर ने जो हजारों की संख्या में मनुष्यों को उत्पन्न किया था, उनमें से सर्वाधिक पवित्रात्माएँ जो–जो थीं, उनको चुना और उनसे समाधि लगवा करके ईश्वर ने उनको ज्ञान दिया। वहीं से गुरू परम्परा चली और सब मनुष्यों को ज्ञान हुआ।

नेत्रहीनो यथा हि एकः कृच्छ्राणि लभतेऽध्वनि।
ज्ञानहीनस्तथा लोके, तस्माज्ज्ञानविदोऽधिकाः।।

अर्थ – जैसे नेत्रहीन मनुष्य मार्ग में अनेक कष्ट पाता है, वही स्थिति इस संसार में ज्ञानरहित मनुष्य की होती है, इसीलिए ज्ञानी मनुष्यों को अधिक श्रेष्ठ माना गया है।

सुगन्धित वैदिक मुस्कान

रचनाकार : **डॉ. सारस्वत मोहन "मनीषी"**
रोहिणी, दिल्ली

निश्छल मन के देवोपम इन्सान थे नैष्ठिक जी।
यज्ञव्रती दृढ़ संकल्पों की शान थे नैष्ठिक जी।
गुरूवर दयानन्द को राम मानकर कार्य किया,
आर्य जाति के सरल, सहज हनुमान थे नैष्ठिक जी।
खण्डन–खण्डन नहीं सिर्फ मण्डन करना जाना था,
अभिशप्तों के लिए सतत वरदान थे नैष्ठिक जी।
अपनी चिन्ता छोड़ दूसरों को निश्चिन्त किया,
अपमानों के बीच खड़े सम्मान थे, नैष्ठिकजी।
सदा रहे विजयेन्द्र निराशा पास न आने दी,
आशाओं के केन्द्र विरल कप्तान थे नैष्ठिक जी।
कहूं आधुनिक कृष्ण आपको तो भी कम ही है,
गौ माता के लिए सतत अभियान थे नैष्ठिक जी।
दयानन्द की फुलवारी में सदा वसन्त रहे,
इस चिन्ता में अस्त हुए दिनमान थे नैष्ठिक जी।
एक नहीं अनगणित शिष्यों से मिलकर यह जाना,
अदभुत ऊहा के अनुपम विद्वान थे नैष्ठिक जी।
मिथ्या भाषण कभी न भाया सदा सत्य गाया,
शुद्ध शुगन्धों की वैदिक मुस्कान थे नैष्ठिक जी।
यतियों के भी यती–जती सागर मीठे जल के,
आने वाले संकट के अनुमान थे नैष्ठिक जी।
पाखण्ड़ों की पीठ टिकाने में न रहे पीछे,
आल्हा ऊदल वीर मर्द मलखान थे नैष्ठिक जी।
धीरे–धीरे कंचन काया की छीजी माया,
किसे पता था कुछ दिन के महमान थे नैष्ठिक जी।
नमन आर्य आचार्य सन्त बलदेव सजल मन से,
अश्रु कहते रहे, कितने अधिक महान थे नैष्ठिक जी।
सभी 'मनीषी' मिलकर अब एकत्व राग गायें,
सदा सुनाई देगी ऐसी तान थे नैष्ठिक जी।

सौजन्य से – **शिवलाल शास्त्री**
शिमली (भिवानी)

महर्षि दयानन्द ग्रंथ परिचय –

सत्यधर्म–विचार

प्रश्न 1 : क्या 'सत्यधर्म–विचार' भी किसी ग्रंथ का नाम है ?

उत्तर : वास्तव में यह एक धर्म चर्चा है, जो मेला चॉदापुर में बड़े बड़े विद्वानों के बीच सत्य के निर्णय के लिए हुई थी। इसी चर्चा अथवा शास्त्रार्थ को बाद में मुद्रित किया गया, प्रिन्ट करवाया गया, जिससे सब लोग पढ़ सकें, और पक्षपात रहित होकर सत्य–असत्य को जान कर जीवन में सत्य को धारण करें। यह धर्म चर्चा "ब्रह्मविचार, मेला चॉदापुर" में प्रतिवर्ष मुन्शी प्यारेलाल की ओर से हुआ करती थी।

प्रश्न 2 यह चर्चा किन–किन मत–सम्प्रदायों के विद्वानों के बीच हुई?

उत्तर : यह चर्चा आर्यो, ईसाइयों और मुसलमानों के विद्वानों के बीच हुई थी। इसमें आर्यों की ओर से स्वामी दयानन्द और मुंशी इन्द्रमणिजी, ईसाइयों की ओर से पादरी स्काट साहब, पादरी नोविल साहब आदि पांच और मुसलमानों की ओर से मौलवी मोहम्मद कासम साहब, सैयद अब्दुल मंसूर साहब आदि पॉच विद्वान थे।

प्रश्न 3 : इस मेले में धर्म चर्चा कितने दिनों तक चली ?

उत्तर : यह मेला दो दिन रहा और धर्मचर्चा भी दो दिन तक चली। स्वामीजी तो चाहते थे कि कम से कम पॉच दिन और अधिक से अधिक आठ दिन तक मेला रहना चाहिए और चर्चा होनी चाहिए। इससे सभी मतों के विचारों को अच्छी तरह से जाना जा सकता है, परन्तु पादरी लोग दो दिन से अधिक ठहरने के लिए तैयार न हुए।

प्रश्न 4 : मेले में धार्मिक चर्चा करने का उद्‌देश्य क्या था ?

उत्तर : मेले में धर्म चर्चा करने का उद्‌देश्य था कि सब लोगों के सामने अलग–अलग मतों के विचार प्रकट होने से पक्षपात रहित होकर सभी सत्य और असत्य का निर्णय कर सकते हैं। स्वामीजी ने कहा कि हम तीनों को उचित है कि पक्षपात छोड़कर प्रीतिपूर्वक सत्य का निश्चय करें, किसी से विरोध करना कदापि योग्य नहीं।

प्रश्न 5 : चर्चा के विषय कौन–कौन से थे ?

उत्तर : चर्चा के लिए निम्न लिखित पॉच प्रश्न चुने गए थे –

1. सृष्टि को परमेश्वर ने किस चीज से, किस समय और किस लिए बनाया है ?
2. ईश्वर सबमें व्यापक है या नहीं ?
3. ईश्वर न्यायकारी और दयालु किस प्रकार है ?
4. वेद, बाईबिल और कुरान के ईश्वरोक्त होने में क्या प्रमाण है ?
5. मुक्ति क्या है और किस प्रकार मिल सकती है ?

प्रश्न 6 : क्या सब प्रश्नों पर चर्चा हुई ?

उत्तर : प्रथम प्रश्न पर तो कुछ लम्बी चर्चा हुई। प्रातः साढ़े सात से ग्यारह बजे की सभा इसी विषय पर चली। उसके पश्चात दोपहर की सभा एक बजे प्रारंभ हुई। तब निश्चय किया गया कि बातें बहुत और समय थोड़ा है। अतः केवल मुक्ति विषय पर विचार किया जाए। वह भी पूरी तरह से नहीं हो पाया था कि मौलवी साहब नमाज पढ़ने के लिए चले गये और चर्चा वहीं अधूरी रह गई।

प्रश्न 7 : बाद में इस चर्चा को ग्रंथबद्ध किसने और कब किया ?

उत्तर : महर्षि दयानन्द ने ही इसे ग्रंथबद्ध करके विक्रम संवत् 1937, श्रावण मास के शुक्ल पक्ष में द्वादशी, मंगलवार के दिन पूर्ण किया।

प्रश्न 8 : यह ग्रंथ किस भाषा में है ?

उत्तर : ऋषि दयानन्द सरस्वती ने यह ग्रंथ हिन्दी में ही लिखा।

प्रश्न 9 : क्या किसी अन्य भाषा में भी यह ग्रंथ छपा था ?

उत्तर : उपर्युक्त हिन्दी वाले ग्रंथ से पहले यह ग्रंथ हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में एक साथ प्रकाशित हो चुका था। इसके बायें कालम में हिन्दी और दायें कालम में उर्दू भाषा थी।

प्रश्न 10 : पुस्तक का यह संस्करण कब और कहां से छपा था ?

उत्तर : पुस्तक का यह प्रथम संस्करण था, जो वैदिक यन्त्रालय, काशी से सं. 1937, भाद्रपद सुदी 6, शुक्रवार (10 सितम्बर 1880) से पूर्व मेला चॉदापुर नाम से छपकर प्रकाशित हो चुका था।

धर्म शनैः संचिनुयाद्, बल्मीकमेव पुत्तिकाः।
परलोक सहायार्थं, सर्व भूतान्यपीड़यन्।।

महाभारत के रचनाकार महात्मा व्यास ने बताया है कि धर्म को कैसे जिया जावे और कहां वह सदा साथ रखने का विषय है, जो सदा साथ रखता है जिसके सदा सदविचार रहते है। वही श्रेष्ठ है, वही सुरक्षित है, वही धार्मिक है, थोडे समय या कभी कभी जो धर्म को अपनाकर धार्मिक बनना चाहते है उनकी स्थिति बहुरूपिए जैसी होती है।

बजट

बजट के बाद, संसद में पर्चा एक आया,
सदस्य ने उठाकर, सभापति की ओर बढ़ाया।
लिखा था महोदय, हर साल बजट में अन्याय होता है,
कानून की निगाह में, न कोई बड़ा, न छोटा है।

फिर, हमारे साथ- ये सरासर क्यों अन्याय है।
हमें उपेक्षित किया, ये कहां का न्याय है।।

हम चोर है या डाकू, पर हैं भारतवासीं,
यहीं जन्में, यहीं पढ़े, यहीं के हैं निवासी ।

आरक्षण, के नाम पर, खजाना देश का लुटा रहे।
घोषणाओं से वोट बैंक अपनी जुटा रहे।

लुभावने बजट ने, सबको लुभाया है।
समझ नहीं सकें हमें क्यों भुलाया है।।

माना कि लूट या चोरी से हम बदनाम हैं,
पर ये धन्धा तो आज हुआ आम है।

वैसे ये सब हो रहा, सरकार की नाक के नीचे।
सफेद पोशों की करनी से, हम तो है बहुत पीछे।

हमारी बिरादरी के ही जो, माता राजनीति की शरण में आ गए।
भाग्य देखो उनका सब करने का लायसेंस वो पा गए।

उनको सारी सुख–सुविधा दी जाती है,
समाज में भी अच्छी भली ख्याती है।
ये हमारे मौसेरे भाई, खुलेआम सब करते हैं।
हम तो रात में, वे दिन में भी नहीं डरते हैं।।

फर्क इतना ही है कि हम दर–दर भटकते हैं,
पुलिस की नजरों में सदा खटकते है।
पकड़ने के डर से, बन्दी देना पड़ती हैं,
यहां सब बिकता है, ये भारत धरती है।।

हम बदनाम और दुस्चरित्र कहलाते हैं,
पर हमारे मौसेरे भाई यहां पुजवाते हैं।
ये सरासर कलंक और भेदभाव चल रहा,
एक देश में खुला अन्याय पल रहा।
उन्हें सम्मान के साथ, सब कुछ मिला है।
फिर हमसे क्या दुश्मनी या गिला है,
छूट, डिस्काउन्ट, आरक्षण, कर चोरों को माफी।
इनकम टैक्स की बढ़ाई सीमा, सस्ते किए चाय, सिगरेट, कॉफी।

तो फिर चोरी, डकैती हो या लूट ।
इसमें क्यो नहीं हैं छूट,
इसे करने में भी कुछ छूट दी जाए,
ताकि हमारी कौम भी राहत पाए।

हमारी मांग जायज व नेक हैं,
सारी बिरादरी इस पर ऐक है।
बजट में हमारे लिए भी प्रावधान लाना जरूरी है,
वर्ना विद्रोह करना फिर हमारी मजबूरी है।

इसलिए हम बजट का विरोध करते हैं,
एक दिन का धरना काली के सामने धरते हैं।

प्रजातन्त्र में हमारी ओर भी ध्यान दिया जावे।
बजट में सजा की छूट का, प्रावधान किया जावें।।

– प्रकाश आर्य, महू

बोधकथा :

सकारात्मक सोच की विजय

"सकारात्मक सोच जीतने का विश्वास प्रदान करती है और जो पूर्ण विश्वास व लगन से कार्य करेगा वो अवश्य ही सफल हो जायेगा।"

— लेखक

शहर से बहुत दूर एक ऊँची पहाड़ी पर एक गॉव बसा हुआ था। गाँव की ज़मीन पथरीली व बंजर थी। वहां हैंडपम्प लगाना और कुऑ बनाना संभव नहीं था। उस गॉव के निवासी अत्यन्त गरीब होने के कारण ट्यूबवैल नहीं लगवा सकते थे। उस समय एक गॉव के चार व्यक्ति दूर तालाब से पानी भरकर लाते और निर्धारित दामों पर बेच देते थे। इन लोगों को काम के लिए सुबह जल्दी उठना पड़ता था, तथा दिन भर कठिन मेहनत करनी पड़ती थी।

इसी गॉव का एक व्यक्ति किसी कारण शहर हो कर आया, वहॉ उसने प्लास्टिक की नलकियों द्वारा पानी खींचते हुए देखा था। इससे उसके दिमाग में एक योजना बन गई जिससे गॉव वालों को कम कीमत पर अधिक पानी उपलब्ध कराया जाए। फिर एक दिन उसने प्लास्टिक की नलकियों (पाइपों) द्वारा तालाब से गॉव तक पानी लाने की योजना पूरी करने की ठान ली।

समय गुजरता गया उसने तालाब से गॉव तक जल्दी आने जाने का छोटा रास्ता ढूंढ़ निकाला और अपने उस खोजे गये रास्ते पर फावडे से जगह–जगह निशान लगा दिये।

एक दिन वह अपनी सारी जमा पूंजी लेकर बाजार गया और प्लास्टिक की नलकियॉ खरीद लाया।

दूसरे दिन वह स्वयं तालाब पर पहुंचा और उन नलकियों को जमीन के अन्दर बिछाने हेतु तालाब के पास से खुदाई का कार्य करना प्रारंभ कर दिया। उसे यह कार्य करते हुए कुछ ही क्षण बीते कि वे चारों व्यक्ति जो पानी बेचने का काम करते थे उस तालाब पर पानी भरने आ पहुंचे। जब उन व्यक्तियों ने उसे वहॉ खुदाई करते देखा तो वे सभी उसके पास गये और उनमे से एक व्यक्ति ने पूछा – भइया ! बहुत दिनों से देख रहा हूं तुम यहॉ से लेकर गॉव तक इधर–उधर फावड़े से निशान लगा रहे थे। अब देख रहा हूं कि तुम खुदाई भी करने लगे हो। आखिर तुम ऐसा किसलिए कर रहे हो?

उस व्यक्ति ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया – भाई साहब मैंने जो फावड़े से निशान लगाये थे, उस रास्ते से मुझे पाइप लाइन बिछानी है, अब खुदाई करके इसमें प्लास्टिक की नलकियों को जोड़कर पाइप लाइन बिछा दूंगा, जिससे इस तालाब का पानी पाइप लाइन के जरिए गॉव तक पहुंचेगा। तब मैं पानी बेचने का व्यापार करूंगा।

उस व्यक्ति का इतना कहना था, कि वे चारों आदमी जोर–जोर से हॅसने लगे, फिर उनमें से एक बोला – अरे मूर्ख ! ऐसा हो ही नहीं सकता। तेरी प्लास्टिक की नलकियों से पानी गॉव तक कभी नहीं पहुंच पायेगा।

दूसरे ने कहा – अरे भइये, तू मेरी मान तो अभी इन पाइपों को बाजार में जाकर बेच दे, वर्ना कहीं ये गड्ढ़े में पड़ गयी तो ये सड़ जायेगी फिर तेरी सारी जमा पूंजी बेकार हो जायेगी।

तीसरे ने कहा – अरे, जब तुझे पानी बेचने का बिजनेस ही करना था। तो हमसे मिल लेता। बेकार में मेहनत कर डाली। चल मेरे साथ में आ जा। देख मैं रोज इस तालाब से बीस बाल्टी पानी ले जाता हूं और दो रूपये प्रति बाल्टी बेचता हूं। जिससे मुझे चालीस रूपये रोज आमदनी होती है।

चौथे व्यक्ति ने तीसरे व्यक्ति की हॉ में हॉ मिलाते हुए कहा – मेरे साथी बिल्कुल सही कह रहे हैं, तेरी भलाई इसी में है कि तूं हम लोगों की बात मान ले।

इस पर जो व्यक्ति खुदाई कर रहा था, कुछ देर तक सोचता रहा फिर बोला – भाई लोगों जो कुछ आप कह रहे है, वो शायद ठीक हो, परन्तु मुझे पूर्ण यकीन है कि मेरी योजना कामयाब रहेगी। मेरा काम पूरा होते ही इस पाइप लाइन के जरिये पानी जरूर गॉव तक पहुंचेगा।

इस पर चारों एक साथ बोल पड़े – अरे बेवकूफ ! जा किसी डॉक्टर से अपना इलाज करवा ले। तू पागल हो गया है। तू जो सोच रहा है वो काम असम्भव है। तेरी इस पाइप लाइन से पानी नहीं आयेगा और यदि आ गया तो देखेगें, कि तू इन प्लास्टिक के जरिए गॉव तक पानी कैसे ले जायेगा, ऐसा कहकर वो चारों वहॉ से चले गए।

जब वे चारों चले गए तो व्यक्ति पाइप बिछाने के अपने काम में जी जान से जुट गया। समय बीतता गया, अन्ततः पाइप लाइन बिछाने वाले व्यक्ति ने भीड़ के सामने औपचारिक रूप से वाल्ब खोल दिया।

कुछ ही देर बाद उस पाइप लाईन से साफ पानी आने लगा। एकत्रित भीड़ में उल्लास छा गया क्योंकि अब उन लोगों को कम पैसों में अधिक पानी मिलने वाला था।

इस कंहानी से पता चलता है, कि कोई व्यक्ति नया काम करने चलता है तो समाज उसे रोकता है, टोकता है, उस पर हॅसता है और उसे चिढ़ाता भी है। परन्तु जो इन रूकावटों को भूलकर निरन्तर संघर्ष करता रहता है वह व्यक्ति एक दिन अपने कठिन से कठिन कार्य को अंजाम दे डालता है अतः हम कह सकते हैं कि मेहनत और आत्मविश्वास के साथ साथ सकारात्मक सोच ही रंग लाती है।

महर्षि दयानन्द के जीवन से –

गुरू दक्षिणा

वृक्ष अपने फल से ही पहचाना जाता है और बीज अपने समान फल लाता है। इसका उत्तर दयानन्द ने समावर्तन संस्कार में दिया। गुरू विरजानन्द जी जानते थे कि मेरे द्वारा जो अग्नि शिष्यों में सुलग रही हे, वह एक दिन अवश्मेव प्रचण्ड ज्वाला के रूप में प्रज्वलित होगी और अन्ध विश्वास, भ्रमजाल आदि का नाश कर देगी। उन्हें यह भी विश्वास था कि मेरे विचार कार्य को यह दयानन्द ही पूर्ण करेगें। यह विचार उनका पूर्णतः सही सिद्ध हुआ।

निर्धन विद्यार्थी दयानन्द विद्या समाप्त करके गुरू से विदा होना चाहते था, तो गुरू की भेंट स्वरूप कुछ लौंग लेकर उनके पास आया। गुरू की प्रिय वस्तु लौंग थी। अतः उन्हें भेंट में दी। गुरू बोले यह क्या लाए ? क्या यही मेरे परिश्रम का परिणाम है ? आप आज्ञा कीजिये, दयानन्द अपने जीवन को भी अर्पित करके आज्ञा का पालन करेगें। मैं यही चाहता हूं वत्स, मैं तुम्हारे जीवन में मंगल की कामना करता हूं। ईश्वर तुम्हारी विद्या को सफलता प्रदान करे। परन्तु गुरू दक्षिणा में इन लौंगों के अतिरिक्त वस्तु मांगता हूं और वह वस्तु तुम्हारे पास है भी।

स्वामी जी बोले, गुरू देव, जो भी आदेश होगा वह शिरोधार्य होगा। आज्ञा करें गुरूदेव ! गुरूजी ने आशीर्वाद पूर्वक कहा, वत्स ! भारत देश में दीन–हीन जन अनेक विध दुःख पा रहे हैं तुम ज्ञान से मतमतान्तरों की अविद्या को मिटाओ और जाओ इनसे उस जन मानस का उद्धार करो। वेदों के प्रकाश से अविद्या रूपी अन्धकार को दूर भगाओ, वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करो, यही मेरी दक्षिणा है।

दयानन्द ने इस दक्षिणा के महत्व पर गम्भींरता से विचार किया और विनम्र भाव से बोले कि यह कार्य अति कठिन है, मेरी शक्ति अत्यल्प है फिर भी मैं इसे आयु पर्यन्त निभाने का यत्न करूंगा। पुनः गुरू ने आशीर्वाद दिया और बोले, बहुत अच्छा दयानन्द ! जाओ ? ईश्वर तुम्हें सफलता प्रदान करें।

दयानन्द दण्डी गुरू के पास से अलौकिक अस्त्रों से सुसज्जित होकर कर्म क्षेत्र की ओर अग्रसर हुए। स्वामीजी मथुरा से आगरा आए।

जल ही जीवन है – इसका सदुपयोग करें।

– जनहित में प्रकाशित

कृतज्ञता के भाव

गुरू दक्षिणा करे आयु पर्यन्त स्वामी जी ने लक्ष्य में रखा। आगरा में जब जनता को इस विचित्र साधु के आगमन की सूचना मिली तो स्वामीजी के पास अनेक नगरवासी भी आने लगे।

दयानन्द पण्डित थे। उनमें अखण्ड ब्रह्मचर्य बल था, साथ ही उत्साह भी। कार्यक्रम का कौन सा रूप अपनाया जाय यह अभी स्पष्ट नहीं हो सका था। आगरे में उन्होंने सन्ध्या की एक पुस्तक का सम्पादन किया। उसके अन्त में लक्ष्मी सूक्त रखा गया था। पं. रूपलाल जी ने डेढ़ सहस्त्र रूपया देकर तीस हजार पुस्तकें छपवाई थीं। स्वामीजी सभी का सन्ध्या करना उचित और शास्त्र सम्मत मानते थे।

आगरे से स्वामी जी धौलपुर पधारे। वहाँ 15 दिन रहकर आबू पर्वत पर चले गए। कभी–कभी कोई शंका होती तो पत्र लिखकर या स्वयं उपस्थित होकर गुरू विरजानन्द से समाधान कर लेते थे। एकान्त में स्वामीजी अपने भावी क्षणों के कार्यक्रमों पर विचार किया करते। वे मूर्ति पूजा को देश के धार्मिक अधः पतन का मूल कारण मानते थे। इसी से इसका निःसंकोच खण्डन किया करते थे। स्वामीजी नित्य प्रति व्याख्यान में पण्डितों का शास्त्रार्थ के लिये आव्हान किया करते थे। किन्तु विद्वानों में से कोई भी उनके सामने नहीं आता था।

दयानन्द की गुरू भक्ति –

एक सुप्रसिद्ध घटना है। दयानन्द जी का गुरू की कुटिया में झाड़ू लगाना भी नित्य कर्म था। एक बार कुटिया में झाड़ू लगाकर कूड़ा इकट्ठा कर दिया और उठाना भूल गये। अचानक गुरू जी का पैर कूड़े पर पड़ गया। स्वाभावानुसार क्रोध में भरकर गुरूजी ने स्वामीजी के थप्पड़ मारा। स्वामीजी ने मारने हेतु डण्डा दिया और कहा कि हाथ में पीड़ा होगी, फिर गुरू के हाथ को दबाया और बोले महाराज मेरा शरीर तो तपस्या से अति कठोर हो चुका है, आपका हाथ कोमल है अवश्य कष्ट हुआ होगा।

जैसे कुम्हार पीट–पीटकर घड़े को बनाता है, वैसे ही गुरूजी मुझ पर दया करते हैं। धन्य हे गुरू भक्ति।

शिक्षा – गुरू से कभी छिपाव मत करो, न उसकी आज्ञा का उल्लंघन करो। कठिन से कठिन दण्ड को सिर झुकाकर स्वीकार करो। तभी जीवन की साधना पूरी होगी और सच्चे ज्ञान की प्राप्ति होगी।

चार वर्ष तक दयानन्द ने गुरू की कुटिया में बैठकर विरजानन्द से विद्या ग्रहण की। अध्ययन काल समाप्त हुआ।

सफलता

प्रश्न : सफलता प्राप्त करने के कुछ कारण लिखो।

उत्तर : सफलता प्राप्त करने के लिए सतर्कता और सावधानी, स्वास्थ्य तथा बल, नियमित दिनचर्या, संकल्प व प्रतिज्ञा, समय पर शीघ्र निर्णय लेना, चिन्तन–विचार करना, परिणाम–प्रभावों का अनुमान लगाना, सहनशीलता व धैर्य, प्रतिज्ञा–वचन का पालन, सेवा–परोपकार दया, आत्मविश्वास, ईश्वर पर अटूट श्रद्धा, दया व क्षमा की भावना, त्रुटि भूल का सुधार आदि मुख्य: कारण हैं।

प्रश्न : असफल कौन होता है ?

उत्तर : असावधान, निर्बल, रोगी, अनियमित, अव्यवस्थित, दीर्घ सूत्री (काम को देरी से करने वाला), निराश हताश, अस्त व्यस्त, आलसी प्रमादी, क्रूर–कठोर, स्वार्थी, चंचल–शीघ्रकारी, संकल्प, प्रतिज्ञा, कंजूस, लोभी, नास्तिक व्यक्ति असफल होता है।

प्रश्न : सफलता प्राप्त करने के पॉच मूल सूत्र बतलाईए ।

उत्तर सफलता प्राप्त करने के लिए – (1) मन में कार्य करने की तीव्र इच्छा हो। (2) कार्य करने के लिए पर्याप्त साधनों का संग्रह हो (3) साधन का प्रयोग करने की यथार्थ विधि का ज्ञान हो (4) अन्तिम परिणाम आने तक पूर्ण पुरूषार्थ हो (5) बाधकों को सहन करने हेतु घोर तपस्या हो।

"धर्म – अधर्म"

दूसरों के द्वारा किया गया जो व्यवहार हमें अपने प्रति अच्छा लगता है वैसा ही दूसरों के साथ करें, इसी का नाम धार्म है और दूसरों के द्वारा किया गया जो व्यवहार हमें अच्छा नहीं लगता है वह हम दूसरों के साथ करते हैं, इसी का नाम अधार्म है।

अभूतपूर्व वेद कथा का आयोजन सम्पन्न

कानड़ जिला शाजापुर नगर में 5 दिवसीय संगीतमयी वेदकथा का आयोजन नगर वासियों तथा आर्य समाज के सदस्यों के द्वारा मिलकर किया गया। जिसमें सनातनधर्मियों के साथ–साथ जैन और मुस्लिम समुदाय के व्यक्तियों ने भी भारी संख्या में उपस्थित होकर कथा को सुना, सहयोग दिया और वैदिक साहित्य भी क्रय किया।

5 दिवसीय संगीतमयी वेदकथा को सुनने के लिए वेद कथा के नाम पर ऐतिहासिक उपस्थिति हुई। आयोजकों के अनुमान से बहुत अधिक उपस्थिति होने से दो बार पांडाल की व्यवस्था को बढ़ाया गया। पहलीबार वैदिक विचारधाराओं से ओतप्रोत वेद कथा सुनने के लिए नगर व ग्रामीण श्रोताओं की संख्या हजारों तक पहुंची।

नगर के व्यापारियों के आग्रह पर कथा के अतिरिक्त एक विशेष सत्र रात्रि. ग्रामीण सभा के रूप में आयोजित किया गया, जिसमें नगर के बड़ी संख्या में व्यापारी वर्ग और अन्य श्रोतागण उपस्थित हुए। इस कार्यक्रम से आर्य समाज के प्रति लोगों में एक आकर्षण बढ़ा है तथा पूरे नगर की ऐसी भावना है कि यह कार्यक्रम वर्ष में दो बार होना चाहिए तथा समस्त नागरिकों ने इसमें सहयोग की भावना व्यक्त की है।

कथा में वेद के साथ साथ उपनिषद, गीता, महाभारत, मनुस्मृति और तुलसीकृत रामायण एवं बीच बीच में भजनों को सुनकर श्रोता मंत्रमुग्ध हो गए। ढ़ाई से तीन घण्टे के बीच में कोई महिला या पुरूष किसी भी कार्य के लिए नहीं उठे, शान्ति से बैठकर सुनते रहते।

इस कथा की प्रस्तुति हमारे सभामन्त्री श्री प्रकाशजी आर्य के द्वारा की गई, जिसे सुनकर लोगों को बहुत ही आश्चर्य और सुख की अनुभूति हुई तथा पहलीबार ऐसे विचार लोगों को सुनने को मिले। अनेक भागवत कथा वाचक एवं मुस्लिम समुदाय के व्यक्तियों ने भी सराहा और उनका स्वागत किया। यह पहला अवसर था, जब लोगों ने आर्य समाज के इस स्वरूप को भी देखा। सरल और रोचक तरीके से की गई कथा का जनता पर गहरा प्रभाव हुआ है। आगामी वर्ष पुनः इस कार्यक्रम की घोषणा की गई है। जिसमें 10 से 15 पन्द्रह हजार व्यक्तियों उपस्थिति होने की संभावना है।

इस कार्यक्रम को सुनने के लिए इन्दौर, उज्जैन, रतलाम, मन्दसौर, महू, देवास, सारंगपुर, शाजापुर आदि स्थानों से भी आर्य समाज के पदाधिकारी पधारे और उन्होंने भी इसकी बहुत ही सराहना की और ऐसे कार्यक्रम आर्य समाज के द्वारा करना चाहिए, ऐसी भावना व्यक्त की।

कार्यक्रम में नगर पालिका के सीएम ओ और कर्मठ कार्यकर्ता श्री मांगीलालजी तथा नगर के प्रबुद्ध नागरिकों और विभिन्न सम्प्रदायों के व्यक्तियों ने सहयोग दिया। श्री काशीराम जी एवं श्री शिवसिंह जी के नेतृत्व में यह एक अभूतपूर्व कार्यक्रम बनकर रह गया।

दरबारसिंह आर्य
उपमन्त्री – उज्जैन संभाग

साहित्य विक्रय केन्द्र का शुभारम्भ

इन्दौर – आर्य समाज मल्हारगंज शहर के मुख्य मार्ग पर स्थित है। मन्दिर के सामने से हजारों व्यक्तियों का आना–जाना लगा रहता है।

दिनांक 7.3.2016 को सभा मन्त्री श्री प्रकाशजी आर्य के कर कमलों से साहित्य विक्रय केन्द्र का शुभारंभ किया गया।

इस अवसर पर अन्य समाजों के सदस्य व श्री गोविन्दजी आर्य, श्री दक्षदेव गौड़ उपस्थित थे।

डॉ. विनोद अहलुवालिया
मन्त्री
आर्य समाज, मल्हारगंज, इन्दौर

वेदरत्न आर्य इन्दौर तहसील प्रभारी नियुक्त

आर्य समाज के प्रचार–प्रसार व व्यवस्थित संचालन हेतु जिला एवं तहसील स्तर पर प्रभारी मनोनीत किए जा रहे हैं उसी तारतम्य में श्री वेदरत्न आर्य को तहसील प्रभारी श्री गोविन्दजी आर्य संभागीय उपप्रधान द्वारा मनोनीत किया गया।

दक्षदेव गौड़
उपमन्त्री – इन्दौर संभाग

आर्य समाज ने मनाया महर्षि दयानन्द बोधोत्सव

सीहोर। स्थानीय आर्य समाज में अपने संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का बोधोत्सव अत्यन्त धूमधाम से आयोजित किया गया। आर्य समाज के मन्त्री रितेश राठौर ने बताया कि सर्वप्रथम प्रातः 8 बजे हवन एवं वैदिक सत्संग कार्यक्रम हुआ। इसके पश्चात एक विशाल रैली आयोजित की गई, जिसमें सैकड़ों आर्यजन वैदिक मान्यताओं के पोस्टर एवं बेनर हाथों में लिए हुए चल रहे थे तथा नगर के समस्त नागरिकों में महर्षि दयानन्द एवं वेदों के उपदेशों का पंपलेट वितरित किया जा रहा था। प्रमुख मार्गो से होकर पुनः आर्य समाज मन्दिर पर पहुंची। इसके पश्चात समस्त आर्यजनों के लिये सहभोज का आयोजित किया गया। कार्यक्रम में रितेश राठौर मन्त्री आर्य समाज, रामस्वरूप गौर प्रधान, नरेश चन्द्र आर्य उपप्रधान, अवधनारायण आर्य, नरेन्द्र आर्य, जगमोहन कौशल, रामदयाल राठौर, सन्दीप राठौर, राजेन्द्र राठौर, विजय राठौर, बाबूलाल आर्य, कमलेश याज्ञिक, राजेन्द्र कसोटिया, डॉ. हरनामसिंह कसोटिया, डॉ. अजय झलावा, रवि शास्त्री, धर्मवीर आर्य, भगतसिंह आर्य, ब्रजेश झलावा, जगदीश आर्य सहित समस्त आर्यजन शामिल हुए।

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल (म. प्र.)

आवश्यक सूचना

श्रीमान प्रधानजी / मन्त्रीजी
आर्य समाज ....

महोदय, सादर नमस्ते,

आपकी ओर यह पत्र आवश्यक जानकारी हेतु प्रेषित किया जा रहा है, कृपया इस पर विशेष महत्व देवें।

जैसा कि आप सबको विदित है कि आगामी दिनांक 22 अप्रेल से 21 मई तक उज्जैन में सिंहस्थ होने जा रहा है। इस अवसर पर पूरे माह में देश–विदेश से करोड़ों की संख्या में यात्री आते हैं आने वाले यात्री प्रायः धार्मिक विचारधारा वाले होते हैं। हम या कोई अन्य संगठन चाहकर भी कभी इतनी बड़ी भीड़ एकत्रित नहीं कर सकते।

हमारे लिए यह एक शुभ अवसर है जब हम आर्य समाज, महर्षि दयानन्द और वैदिक धर्म का इतनी बड़ी संख्या में प्रचार कर सकते हैं। आज दूसरे मतावलम्बी जोर शोर से सारे हथकन्डे अपनाकर अपने मजहब के प्रचार में, संख्या बढ़ाने में लगे हैं। सनातन धर्मियों का दूसरा पक्ष हमारे पौराणिक भाई इससे बेखबर हैं, सनातन धर्मियों की स्थिति चिन्ताजनक है। इस स्थिति को केवल आर्य समाज ही संभाल सकता है। इसलिए सत्य सनातन वैदिक धर्म के व आर्य समाज के सिद्धांतों का अधिक से अधिक प्रचार प्रसार इस अवसर पर करके अपने विचार लाखों व्यक्तियों तक पहुंचाए जा सकते हैं।

अच्छा हो हम सभी इस कार्य में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करके इस सिंहस्थ को वैदिक धर्म की दृष्टि से ऐतिहासिक बनाकर सार्थकता प्रदान करें। यह अवसर पुनः 12 वर्ष पश्चात आवेगा, तब कौन कितना सहयोगी रहेगा, या रहेगा ही नहीं, यह कहा नहीं जा सकता। **वर्तमान को जो संभालते हैं वही जीतते हैं।**

अतः अपने मिशन के लिए सिंहस्थ हेतु धन तथा समय का दान करें। आपकी समाज से कौन, कितने दिन वहां रहकर कार्य में सहयोगी बनेगें, ऐसी सूची कृपया बनाकर प्रेषित करें। ऐसे महानुभावों के नाम, पते, फोन व मोबाईल नम्बर भी अपेक्षित हैं। इस हेतु व्यक्तिगत व समाज का सामुहिक प्रयास अत्यन्त वांछित है। इस बार यह आयोजन राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित हो रहा है। प्रचार प्रसार हेतु लाखों का साहित्य वितरण, वैदिक सिद्धान्तों और महापुरूषों पर आधारित फिल्म शो, वृहद प्रदर्शनी, 1 लाख सत्यार्थ प्रकाश नाम मात्र के मूल्य पर विक्रय, ऐसी अनेक बातों का समावेश पहली बार होगा। इस हेतु आर्य समाज की सर्वोच्च शाखा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली व देश की अन्य प्रान्तीय सभाओं का भी

सहयोग व मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। सम्पूर्ण माह का कार्यक्रम व प्रचार योजना, रचनात्मक दृष्टिकोण से निश्चित की जा रही है। इस संबंध में अपने महत्वपूर्ण सुझाव भी वैदिक धर्म प्रचार समिति आर्य समाज उज्जैन, या सभा को अवश्य भेजें।

0 **दूसरी महत्वपूर्ण सूचना है,** कृपया, आर्य समाजों में अपना रेकार्ड व्यवस्थित रखें। साप्ताहिक सत्संग, सदस्य एवं सभासद सूची, शतांष का पूर्ण व्यवस्थित लेखा जोखा तथा उपस्थिति रजिस्टर यह सब समाज के महत्वपूर्ण एवं अवश्य पालनीय कार्य हैं, इनको व्यवस्थित न रखने से अनेक विवादों का जन्म होता है। अतः कृपया इस पर ध्यान देकर इसे व्यवस्थित करें।

0 सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार प्रत्येक वर्ष की 15 मई तक स्थानीय आर्य समाज के निर्वाचन करवाकर उसकी सूचना, प्रतिनिधि चित्र प्रान्तीय सभाओं को प्रेषित कर देना चाहिए। समाजों के प्रतिनिधि चित्र ही प्रान्तीय सभा के निर्वाचन का आधार होते हैं।

कुछ समाजें अपने निर्वाचन मई माह के पश्चात जून, जुलाई और कुछ अगस्त तक करवाते हैं। किन्तु इस कारण त्रैवार्षिक निर्वाचन में उनको भाग लेने की पात्रता नियमानुसार नहीं रह जाती है। इसलिए सार्वदेशिक सभा के निर्देशों का पालन करते हुए निर्देशित समय तक या उसके पूर्व अपनी समाज के निर्वाचन अवश्य करवा लेवें। आर्य समाजों के पुराने निर्वाचित प्रतिनिधियों के नाम सभा के 2016–17 के निर्वाचन में स्वीकार्य नहीं होगें। **प्रान्तीय सभा के निर्वाचन में जिन आर्य समाजों के निर्वाचन वर्ष 2016–17 के लिए हो चुके हैं उनके चित्र निर्वाचन के पश्चात 15 जून तक या उसके पूर्व प्राप्त हो जावेगें, उन्हीं के प्रतिनिधियों को सभा निर्वाचन में भाग लेने की पात्रता है। विशेष कारणों से अन्तरंग अथवा प्रतिनिधि चित्र निरीक्षण समिति में विलम्ब से आने वाले चित्रों पर विचार किया जाकर निर्णय लिया जावेगा।**

अतः सभी समाजों को इस नियम को दृढ़ता से मानते हुए अपने अनुशासित संगठन का सदस्य होने का परिचय देना चाहिए, ऐसा निवेदन है।

0 समाजों से देय दशांष राशि सभा के संचालन में बहुत बड़ा सहयोग होता है। समाजों और सभाओं का गठन वैदिक धर्म प्रचार–प्रसार के लिए किया गया है। सभा की आर्थिक स्थिति मजबूत होने पर प्रचार प्रसार की अधिक व महत्वपूर्ण योजना बनाकर कार्य किया जा सकता है। सभा में आगे और प्रचारकों व आर्यवीर दल प्रशिक्षकों की वृद्धि करना है, भवनों, विद्यालयों व प्रदर्शन तक ही अपनी शक्ति सीमित नहीं करना है। ठोस प्रचार कार्य करना वक्त की आज महती आवश्यकता है।, यही हमारा लक्ष्य है। बिना प्रचार प्रसार के आर्य समाज संगठन की कोई सार्थकता नहीं है, लक्ष्य विहीन संगठन का कोई औचित्य नहीं, क पया इस पर ध्यान देवें।

निश्चित कोटि : ग्रामीण समाजें जिनके भवन हैं वे 500 रूपए जिनके भवन नहीं हैं, वे 251 रूपया। शहरी समाजों में जिनके भवन हैं वे 1100 तथा जिनके भवन नहीं है वे 500 प्रदान करें। यह राशि वार्षिक देय है।

इन नियमों पर विशेष ध्यान देवें।

0 किसी आर्य समाज या निर्वाचन में कम से कम 11 सभासद होना आवश्यक है।

0 आर्य समाज द्वारा सभा को जो दशांष दिया जाता है, उसमें आर्य समाज के सदस्यों से प्राप्त शतांष (चन्दा), विवाह संस्कार सम्मिलित है, भवन, दुकान किराया, बैंक में जमा निश्चित समयावधि (फिक्स डिपाजिट) पर प्राप्त ब्याज इन पर दशांष दिया जाना चाहिए।

0 कृपया प्रतिनिधि चित्र न मिलने पर अपने संभाग के पदाधिकारियों से या मुख्यालय, भोपाल से सम्पर्क कर प्राप्त करें।

0 प्रान्तीय सभा में प्रतिनिधि भेजे जाते हैं, उनमें प्रथम 11 सभासदों पर एक और इसके पश्चात प्रत्येक 20 सभासदों पर एक इस प्रकार होना चाहिए। प्रतिनिधि चित्रों का निरीक्षण होने पर अनियमित प्रतिनिधि चित्र निरस्त किया जा सकता है।

0 अतः अपनी समाज का अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग प्रान्तीय सभा को प्रदान करें। सदस्यों से शतांष नियमानुसार प्राप्त करें तथा सभा को अपनी समाज की आय का दशांष ईमानदारी से प्रेषित करें, यह निवेदन है।

नोट : विचार टी वी चैनल द्वारा वैदिक सिद्धान्तों और महापुरूषों पर आधारित फिल्मों के प्रदर्शन की व्यवस्था की गई है।

भवदीय :

(प्रकाश आर्य)

सभामन्त्री

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

इन्दौर – आर्य समाज दयानन्दगंज में नगर की समस्त आर्य समाजों के द्वारा संयुक्त रूप से बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। बड़ी संख्या में आर्यजन व अन्य सनातनधर्मी इस अवसर पर उपस्थित थे।

मुख्य वक्ता सभामन्त्री श्री प्रकाश जी आर्य एवं आचार्य प्रभामित्र थे। श्रीमती स्नेहलता हाण्डा ने भजन के माध्यम से प्रस्तुति की।

इसी अवसर पर श्री बाबूलालजी जोशी द्वारा लिखी पुस्तक ''सामवेद शतक'' का विमोचन भी किया गया।

मनुस्मृति को जलाना एक अज्ञानता व सनातन संस्कृति की उपेक्षा है !

जे एन यू परिसर में मनुस्मृति को जलाना एक दुर्भाग्यपूर्ण और अज्ञानता का परिचायक है। महर्षि मनु विशुद्ध सनातन धर्म के अनुयायी थे जिसमें ऊंच नींच, जाति पांत, स्त्री, पुरूष, देश काल के भेदभाव का लेशमात्र भी कहीं कोई भाव नहीं रहता है। अज्ञानता के कारण ही यह हो रहा है। वास्तव में जिस प्रकार आज समाज सत्य ज्ञान से दूर होकर सम्प्रदायों को धर्म मान रहा है, उसी प्रकार सुनी सुनाई और सनातन धर्म की मूल भावना व आस्था को क्षति पहुंचाने वालों ने मनु के लिए जाति वाचक और महिला विरोधी शब्द का प्रयोग किया है।

वास्तव में मनु का पूरा विचार वेद जो ईश्वरीय ज्ञान है, उस पर आधारित है, जिसमें मानव मानव के बीच किसी प्रकार की विषमता का एक भी शब्द नहीं है। मनु ने ही नारी जाति के सम्मान में यह सन्देश समाज को दिया था **"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः"** सनातन संस्कृति के पोषक मनु कभी भी इस प्रकार की बातों का समर्थन नहीं कर सकते। नारी का सम्मान वैदिक संस्कृति में पुरूषों से भी अधिक देते हुए वैदिक विचारधारा में लिखा गया **"मातृमान पितृमान आचार्यवान"** माता को पहला स्थान दिया। इसी प्रकार मानव निर्माण में माता का ही निर्माण कहते हुए लिखा **माता निर्माता भवति"**। इस प्रकार के सम्मानजनक और महत्वपूर्ण विचारों से प्रभावित, आचार्य मनु नारी जाति के विरूद्ध कैसे लिख सकते हैं ? यह दोष जानबूझकर उन लोगों ने जो सनातन धर्म को बदनाम करना चाहते थे, उन्होंने मनु के विचारों में ऐसी मिलावट की है। मनु के संबंध में विद्वान लेखक **डॉ. सुरेन्द्र कुमार** कुलपति गुरूकुल कांगड़ी हरिद्वार द्वारा लिखी गई **"विशुद्ध मनुस्मृति"** को पढ़कर देखा जा सकता है और मनु के नारी जाति के प्रति सम्मानजनक भावों को पढ़ा जा सकता है ताकि भ्रांति का स्वतः निराकरण हो जावेगा।

वास्तव में नारी जाति की गरिमा को महत्व देने का जो विचार रखते हैं वह सराहनीय है किन्तु विरोध करना है तो उनका करो जिनमें नारी को पशु तुल्य बताया है, नारी को भोग की वस्तु कहा है, और नारी को गुलाम बनाकर रखा है, तब इसे सच्चा पुरूषार्थ कहा जा सकता है। यह कार्य 5000 वर्षों के पश्चात यदि किसी ने किया है तो वह महर्षि दयानन्द सरस्वती हैं, इसकी पुष्टि करना है तो महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश के 13वें, 14 वें समुल्लास को पढ़कर की जा सकती है।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि सनातन संस्कृति को दूषित करने का प्रयास आज से नहीं वर्षों से हो रहा हे और इस प्रकार के कई भांड़यन्त्र पकड़े गए यह भी उसी दुष्कृत्य का परिणाम है। पहले किसी भी विचार व सिद्धान्तों को पढ़े, समझे फिर उसके संबंध में निर्णय लेना उचित होगा। सुनी सुनाई बातों पर या अधूरे ज्ञान से किसी के संबंध में सही निर्णय नहीं लिया जा सकता है।

(प्रकाश आर्य)

मन्त्री : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

स्वामी अग्निवेशजी द्वारा फिर आपत्तिजनक बयान

पंजाब में जाकर "सत्यार्थ प्रकाश" में परिवर्तन की बात, गिलानी को लेकर या अमरनाथ यात्रा-को लेकर सनातन धर्मियों के विरूद्ध बयान, अन्ना हजारे का आन्दोलन, समलैंगिकता का समर्थन और अब पुनः साम्प्रदायिकता और जे. एन. यू. को लेकर विवादास्पद आम नागरिक के विरूद्ध दिया गया बयान। स्वामी अग्निवेशजी की इस प्रकार की बयानबाजी आर्य समाज, हिन्दू समाज को सदा नुकसानदायक सिद्ध होती रही है। सनातनधर्मियों का और सभ्य समाज का आर्य समाज के प्रति दृष्टिकोण ठीक नहीं बना। पूर्व में भी अनेक ऐसे विवादास्पद बयान आते रहे हैं, जिसका विरोध आर्य समाज ने किया। किन्तु फिर कुछ दिनों में ऐसी कोई न कोई बात मीडिया के माध्यम से स्वामीजी करते रहे हैं, जिससे आर्य समाज के लोगों को नींचा देखना पड़ता है। हाल ही में जारी किए एक बयान का वाट्स अप जब कुछ लोगों ने पढ़ा तो उस संबंध में कई लोगों ने मोबाईल पर व फोन पर यह प्रश्न किया कि अग्निवेश जी आर्य समाज के सन्यासी अपने को बताते हैं और मुसलमानों की वकालात और सनातन धर्मियों का विरोध करते हैं, देश द्रोह के नारे लगाने वाले लोगों की वकालात करते हैं, यह क्या है। क्या आर्य समाज उनके इस वक्तव्य को मानता है।

वाट्स अप पर स्वामी अग्निवेश ने यह कहा कि **वे नेताओं को बताना चाहते हैं कि मुसलमानों की तरफ उंगली उठाकर के उनकी देशभक्ति का सार्टिफिकेट मांगा जाता है। मैं ऐसे नेताओं को चेतावनी देकर कहना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान में रहने वाला हर मुसलमान यहां पर किराएदार नहीं हैं, यहां का हिस्सेदार है और उन्होंने इस मुल्क की आजादी में अपना खून बहाया है।** साथ ही जे.एन.यू. की वकालात करते हुए उसके महत्व का गुणगान किया है, और कहा पुलिस ने अवैधानिक तरीके से होस्टल में घुसकर वहां से कन्हैयालाल को गिरफ्तार किया है और उस पर देशद्रोह का मुकदमा चलाया जा रहा है। एवं राजनैतिक भावना से केन्द्रिय शिक्षा मन्त्री स्मृति ईरानी का नाम लेते हुए उन्हें सचेत कर कहा है कि उनके मंसूबे नहीं चलने देगें।

यह भाषण निश्चित ही किसी भी सनातनधर्मी और देशवासियों की भावना के विरूद्ध है। इसका प्रभाव आर्य समाज की निष्ठा पर होता।

आर्य समाज इस प्रकार के बयान को दुर्भाग्यपूर्ण मानते हुए इसकी भर्त्सना करता है।

भवदीय :

(प्रकाश आर्य)

सभामन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

दलितों व गरीबों को गले लगाना होगा– विनय आर्य

आर्य नेता विनय आर्य का जिला सभा कोटा द्वारा कोटा जं. पर स्वागत

कोटा, 12 मार्च। समाज को सर्वांगीण विकास व उन्नति की ओर ले जाना है तो हमें मिलकर दलितों व गरीबों को गले लगाना होगा, उन्हें बराबर का दर्जा देकर अपना बनाना होगा तभी देश की उन्नति संभव है।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने लगभग 150 वर्ष पूर्व ही कह दिया था मनुष्य में कोई छोटा बड़ा नहीं है सब समाज के अंग है जैसे कि शरीर के सब अंग महत्वपूर्ण है। उक्त विचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के उपमंत्री एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि के महामंत्री विनय आर्य ने कोटा स्टेशन के प्लेटफार्म पर व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि आर्य समाज में किसी प्रकार का जाति भेदभाव नहीं है हिन्दू धर्मावलम्बी किसी भी जाति का हो हमारे यहां पूरा सम्मान पाता है।

कार्यक्रम में भाग लेकर दिल्ली लौट रहे विनय आर्य का आर्यसमाज जिला सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा के नेतृत्व में आर्य समाज की एक टीम ने रेलवे प्लेटफार्म पर उनका भव्य स्वागत किया तथा आर्यसमाज ने उनके नेतृत्व के लिए आभार व्यक्त किया।

आर्यसमाज जिला सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा ने विनय आर्य को आश्वासन दिलाया कि कोटा क्षेत्र में आर्यसमाज निरंतर गतिशील व सेवारत है। हम दलितों व गरीब तबके के लोगों के प्रति और अधिक संवेदनशील होकर कार्य करेंगे। उन्हें समाज की मुख्यधारा में जोड़ने के लिए आर्यसमाज प्रयास करेगा कि उनके हर सामाजिक कार्य में आर्यसमाज उनकी मदद करे, उनके साथ खड़ा रहे।

इस अवसर पर दिल्ली सभा के आर्य तथा कोटा के आर्य विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक, जिला सभा के प्रचार मंत्री अरविन्द पाण्डेय एवं आर्यसमाज विज्ञाननगर के मंत्री राकेश चढ्डा उपस्थित थे।

सर्वप्रथम विनय आर्य एवं संदीप आर्य का गायत्री मंत्र से सुसज्जित केसरिया दुपट्टा औढ़ाकर वेद मंत्रोच्चार के साथ स्वागत किया गया।

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका सम्पादन का प्रयत्न सरलतम किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करें। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए। साथ ही अपनी वार्षिक सहयोग राशि भी प्रेषित करें।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

वैदिक धर्म प्रचार का महत्वपूर्ण अवसर उज्जैन सिंहस्थ

दिनांक 22 अप्रेल से 21 मई 2016 तक

मान्यवर,

भारत वर्ष में कुंभ और सिंहस्थ के नाम पर संभवतः ये विश्व के सबसे बड़े आयोजन होते हैं। जिसमें एक माह तक करोड़ों की संख्या में जन मानस का अपना जाना होता है।

हम प्रयास करके भी कभी इतनी बड़ी संख्या एकत्रित नहीं कर सकते। यह हमारी बात, वैदिक सिद्धान्तों को करोड़ों व्यक्तियों तक पहुंचाने का बहुत बड़ा समय है। इस बार 21 अप्रेल से 21 मई तक एक नहीं दो स्थानों पर पांडाल लगाकर वैदिक धर्म प्रचार की योजना बनाई गई है। इसके द्वारा पूरा प्रयास रहेगा कि हम आने वाली इतनी बड़ी संख्या में से लाखों व्यक्तियों तक अपनी बात पहुंचावेगें। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी ऐसे ही अवसर पर कुंभ में पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी।

भव्य यज्ञशाला, प्रवचन, व्याख्यान, भजन की प्रस्तुती, विशाल प्रदर्शनी, विचार चैनल के माध्यम से लघु फिल्म शो, विक्रय हेतु अनेक स्टॉल, वैदिक विचारधारा का निःशुल्क साहित्य वितरण, बाहरी साज सज्जा यह सबकुछ अभूतपूर्व करने का प्रयास प्रारंभ हो चुका है।

किन्तु हम सबका सहयोग ही इस पवित्र वेद प्रचार के भव्य आयोजन को सफल बना सकता है।

अतः कृपया सभी इस पवित्र कार्य में अपनी आहुति प्रदान करें। कार्यक्रम हेतु आवश्यक सुझाव भी आर्य समाज, नई सड़क, उज्जैन के पते पर भेज सकते हैं।

सभी दान राशि **"सिंहस्थ मेला वैदिक धर्म प्रचार समिति"** के नाम से चेक या ड्राफ्ट द्वारा, आर्य समाज मन्दिर, आर्य समाज मार्ग, उज्जैन (म.प्र.) के पते पर भेजें।

SBI A/c No. 35072661286 IFS Code : SBIN0000492

दान राशि खाते में जमा कर या जमा स्लीप पर अपना नाम, स्थान एवं पता लिखकर फोटो कॉपी भिजवायें।

Email : aryasmjujnkumbh2016@gmail.com

विनीत :

इन्द्रप्रकाश गांधी	लक्ष्मीनारायण पाटीदार	वेदप्रकाश आर्य
सभाप्रधान	संयोजक	कोषाध्यक्ष
म.भा.आ.प्रति.सभा	वैदिक धर्म प्रचार समिति	वैदिक धर्म प्रचार समिति
9425137097	**9827078880**	**9425930484**

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है। ईश्वर वही है जो सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य
...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।
महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥
सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान है, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा चतुर्वेदी प्रिन्टर्स, इन्दौर से मुद्रित कराकर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक – **प्रकाश आर्य, महू**

AMIT # 98262-21082